RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा-12 इतिहास हिंदी माध्यम

ARJUN BATCH

यात्रियों के नजरिये

Chapter-5 | Part-7

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?

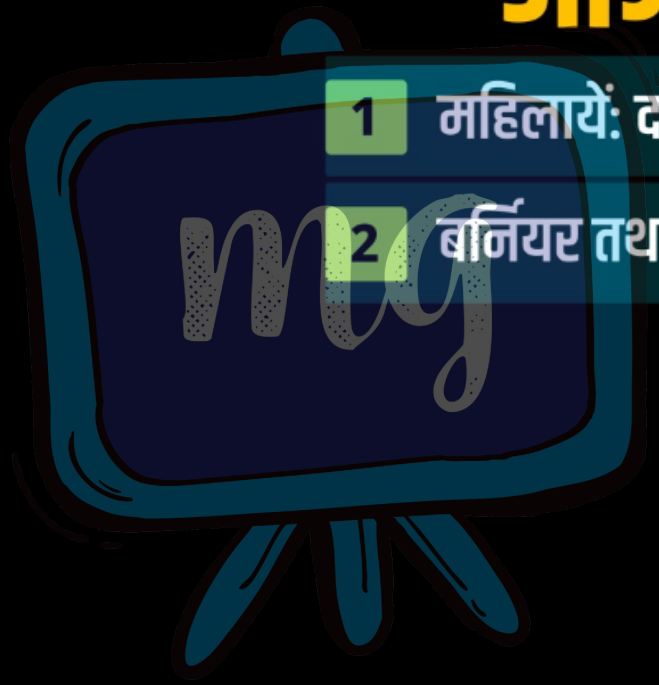

1. महिलायें: दासियाँ, सती तथा श्रमिक
2. बर्नियर तथा सती प्रथा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

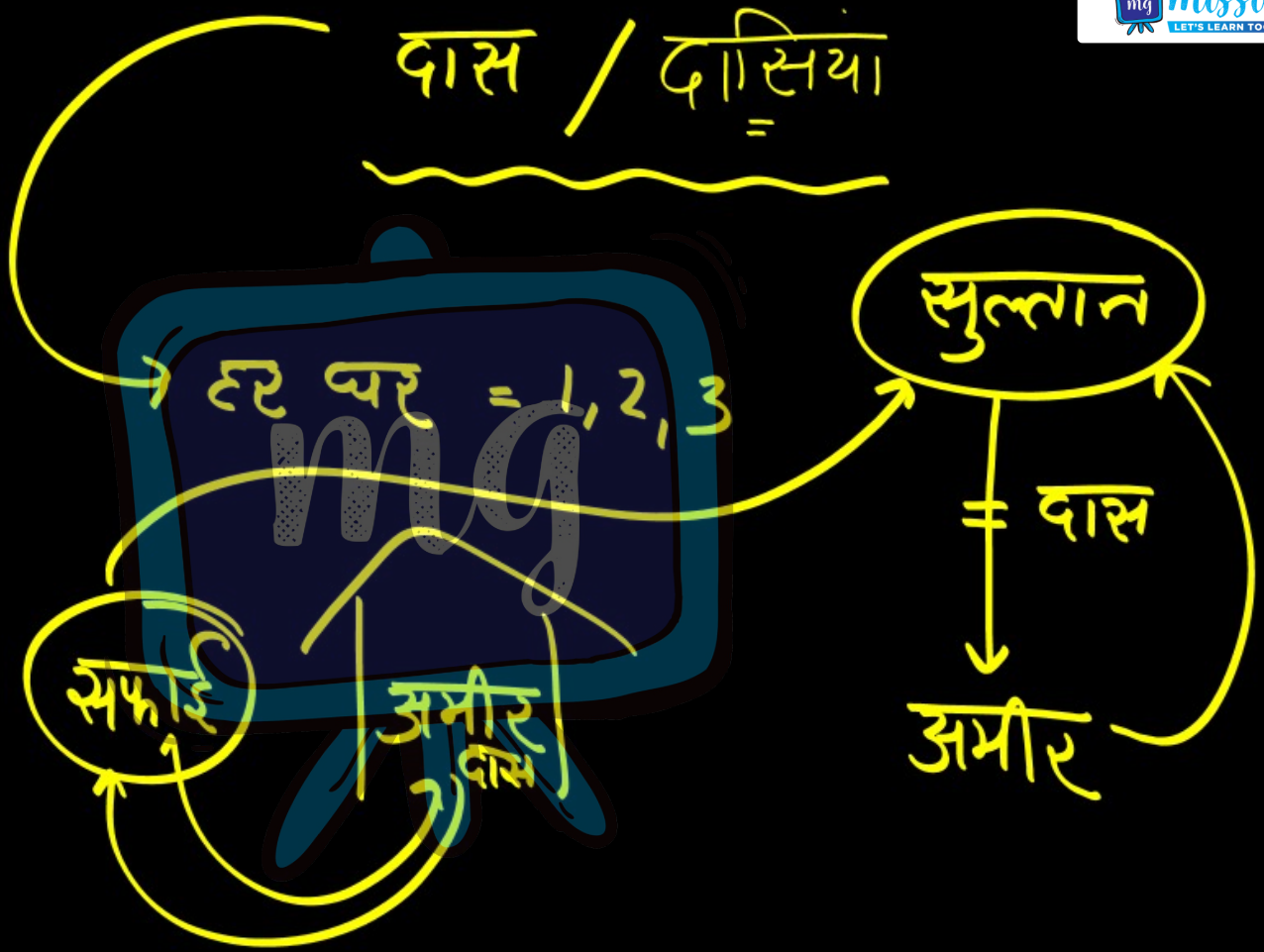

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. इब्नबतूता द्वारा दास प्रथा के संदर्भ में दिए गए साक्ष्यों की विवेचना कीजिए?

दासियाँ :-

इब्न बतूता अपने वर्णन में बताते है कि :-

- सम्राट हर छोटे या बड़े अमीर के साथ अपने एक दास को रखता था जो सम्राट के लिए जासूसी का कार्य करते थे।
- वह महिला सफाई कर्मचारियों को भी नियुक्त करता था जो बिना बताये घर में घुस जाती थी। वे दासियों से सूचनाऐं प्राप्त कर लेती थी।
- दासियों को लूट, हमलों व अभियानों के दौरान बलपूर्वक प्राप्त किया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

९. इब्नबतूता ने दास प्रथा के बारे में क्या बताया है?

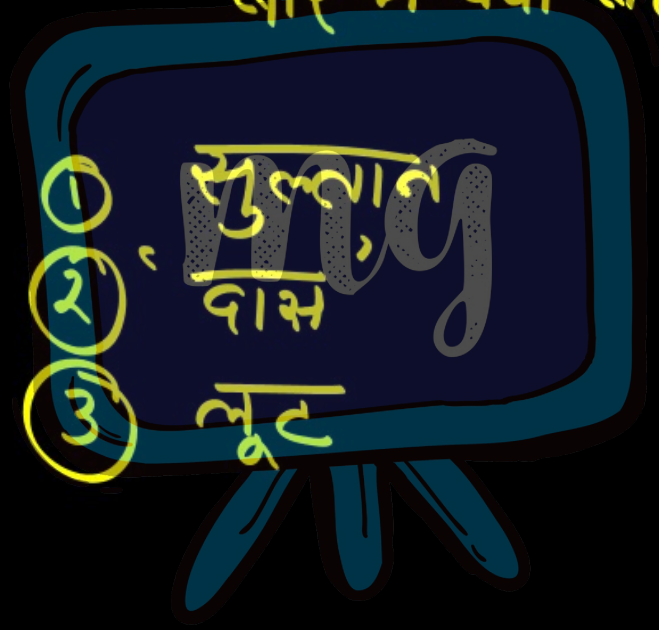

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बाल विवाह

↓

पु	महिला
५०	१२

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बर्नियर तथा सती प्रथा :-

- सती प्रथा के वर्णन को बर्नियर ने मुख्य रूप से चुना।
- सती प्रथा में कुछ महिलाऐं प्रसन्नता से मृत्यु को चुन लेती थीं तथा अन्य को सती होने के लिए बाध्य किया जाता था।

Q. सती प्रथा के संदर्भ में बर्नियर का क्या दृष्टिकोण था?

सती बालिका :-

बर्नियर के वृत्तान्तों में लाहौर की घटना का वर्णन सबसे मार्मिक है। उसके अनुसार :-

- बर्नियर ने लाहौर में 12 वर्ष की एक सुन्दर अल्प व्यस्क विधवा को सती होते देखा।
- उस भयानक नर्क की ओर जाते समय व असहाय बच्ची जीवित से अधिक मृत प्रतीत हो रही थी।
- वह काँपते हुए बुरी तरह रो रही थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ लोग उसे जबरदस्ती पकड़ कर उस घातक स्थान की ओर ले जाकर लकड़ियों पर बैठा देते है।
- उसके हाथ व पैर बांध दिये ताकि भाग न पाये। इस स्थिति में उस मासूम को जिन्दा जला दिया गया।
- बर्नियर कहता है कि ''मैं अपनी भावनाओं को दबाने में और उनके कोलाहलपूर्ण तथा व्यर्थ के क्रोध से बाहर आने से रोकने में असमर्थ था।''

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

काल रेखा (कुछ यात्री जिन्होंने वृत्तान्त छोड़)	
दसवीं–ग्यारहवीं शताब्दियाँ	
973–1048	मोहम्मद इब्न अहमद अबू रेहान अल बिरूनी (उजबेकिस्तान से)
तेरहवीं शताब्दी	
1254–1323	मार्को पोलो (इटली से)
चौदहवीं शताब्दी	
1304–77	इब्न बतूता (मोरक्को से)
पंद्रहवीं शताब्दी	
1413–82	अब्द अल–रज्जाक कमाल अल–दिन इब्न इस्हाक अल–समरकंदी (समरकंद से)
1466–72 (भारत में बिताए वर्ष)	अफानासी निकितिच निकितन (पंद्रहवीं शताब्दी, रूस से)

विजय नगर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

काल रेखा (कुछ यात्री जिन्होंने वृत्तान्त छोड़े)	
सोलहवीं शताब्दी	
1518 (भारत की यात्रा)	दूरते बारबोसा, मृत्यु 1521 (पुर्तगाल से)
1562 (मृत्यु का वर्ष)	सयदी अली रेइस (तुर्की से)
1536–1600	अंतीनियो मानसेरेते (स्पेन से)
सत्रहवीं शताब्दी	
1626–31 (भारत में बिताए वर्ष)	महमूद वली बलखी(बल्ख से)
1600–67	पीटर मुंडी (इंग्लैंड से)
1605–89	ज्यौं बैप्टिस्ट तैवर्नियर (फ्रांस से)
1620–88	फ्रांस्वा बर्नीयर (फ्रांस से)

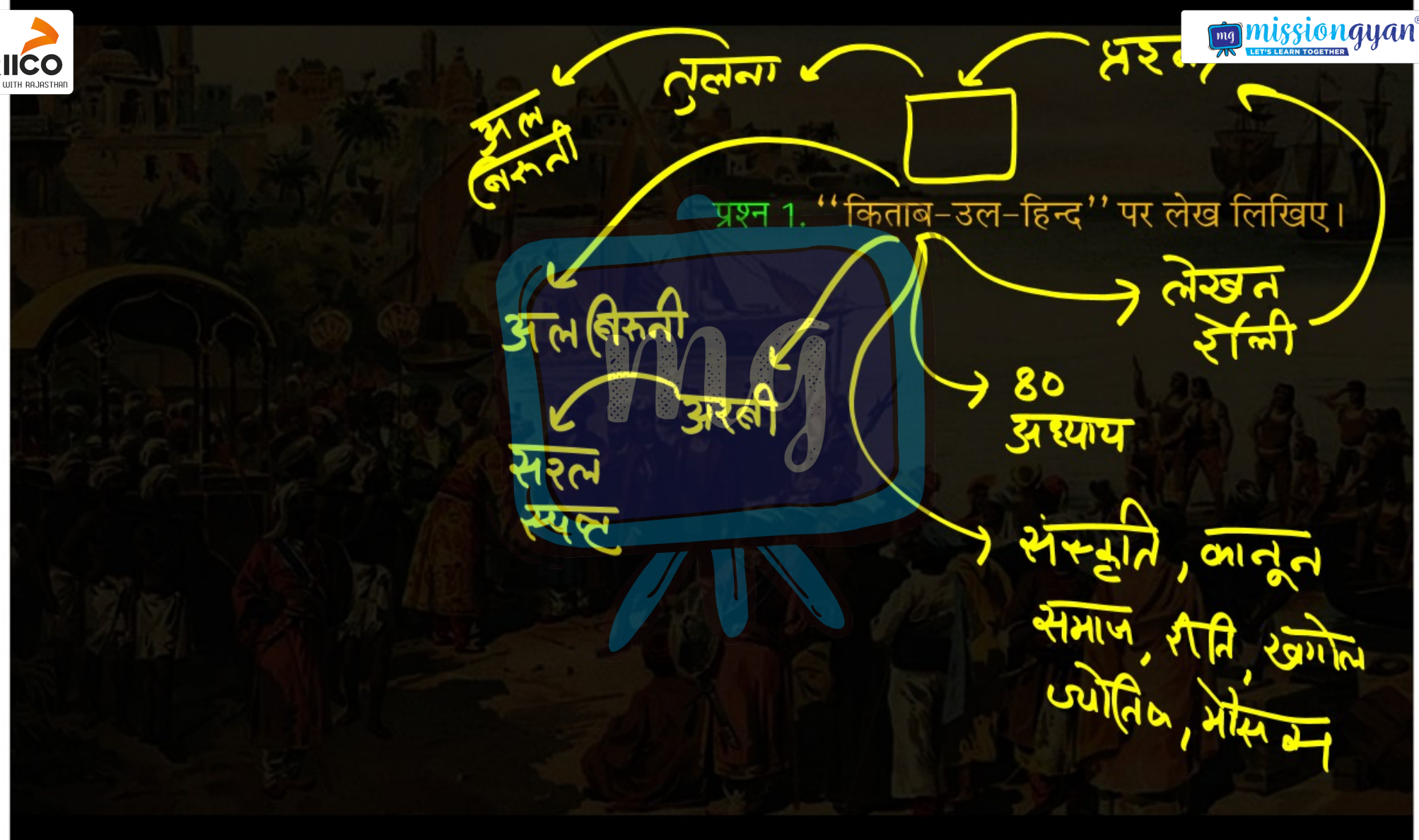

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्न 1. "किताब-उल-हिन्द" पर लेख लिखिए।

प्रश्न

तुलना

अल बिरूनी

अल बिरूनी

अरबी

सरल
स्पष्ट

लेखन शैली

80 अध्याय

संस्कृति, कानून
समाज, रीति, खगोल
ज्योतिष, मौसम

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : ''किताब-उल-हिन्द'' अल-बिरूनी द्वारा अरबी भाषा में लिखित ग्रन्थ हैं। अल-बिरूनी ने इसमें भारत के धर्म, दर्शन, त्यौहार, खगोल विज्ञान, कीमिया, रीति-रिवाज व प्रथाएं भार-तौल, भारतीयों का सामाजिक जीवन, मापन-तंत्र, विज्ञान, मूर्तिकला तथा कानून का विशद् वर्णन किया है।

80 अध्यायों में विभाजित इस ग्रन्थ में एक विशिष्ट लेखन शैली देखने को मिलती है जिसमें लगभग सभी अध्यायों का प्रारम्भ एक प्रश्न से होता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उसके बाद उसका संस्कृतवादी परम्पराओं से वर्णन तथा अंत में अन्य संस्कृतियों से उसकी तुलना। अनेक इतिहासकार इसे ज्यामिति रचना कहते हैं क्योंकि अल-बिरूनी का झुकाव गणित की ओर था।

अल-बिरूनी अनेक भाषाओं से परिचित थे तथा उस समय संस्कृत, पालि एवं प्राकृत भाषाओं में होने वाले अनुवाद की जानकारी उन्हें थी। इस पुस्तक में अनेक प्राचीन दन्तकथाओं के साथ-साथ खगोल विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान से संबंधी जानकारी प्राप्त होती है। यदि संक्षेप में हम कहें तो मध्यकालीन भारतीय इतिहास के विषय में जानकारी का यह एक महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं।

प्रश्न 2. इब्न बतूता और बर्नियर ने जिस दृष्टिकोण से भारत में अपनी यात्राओं के वृतान्त लिखे थे, उनकी तुलना कीजिए तथा अंतर बताइए।

अ	फ्रां
रोचक	-ve
क्षेत्र, स्थान	- निजी ✓

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : इब्न बतूता व बर्नियर के यात्रा वृतान्तों में अंतर स्पष्ट दिखाई देता है। इब्न बतूता अन्य यात्रियों की तुलना में पुस्तकों के स्थान पर यात्राओं से प्राप्त ज्ञान को अधिक महत्व देता है। वह अपनी पुस्तक "रिहला" में नवीन संस्कृतियों, लोगों, मान्यताओं तथा आस्थाओं आदि का वर्णन करता है।

उसने भारत की विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन विस्तार से किया है। नारियल व पान जैसे वनस्पतिक उपज का वर्णन किया है जिससे उसके प्रदेशवासी अनजान थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

वह भारत को समृद्ध व घनी आबादी वाला शहर मानता था। वह यहाँ शहरी संस्कृति व बाजारों की चहल-पहल से प्रभावित था। यहाँ की डाक व्यवस्था को अत्यधिक कुशल मानता था। इनका लेखन दृष्टिकोण आलोचनात्मक था।

दूसरी ओर बर्नियर ने भारत की कमियों को उजागर करने का प्रयास किया साथ ही भारत में जो भी देखा उसकी तुलना यूरोप विशेषत: फ्रांस में व्याप्त स्थितियों से करता था।

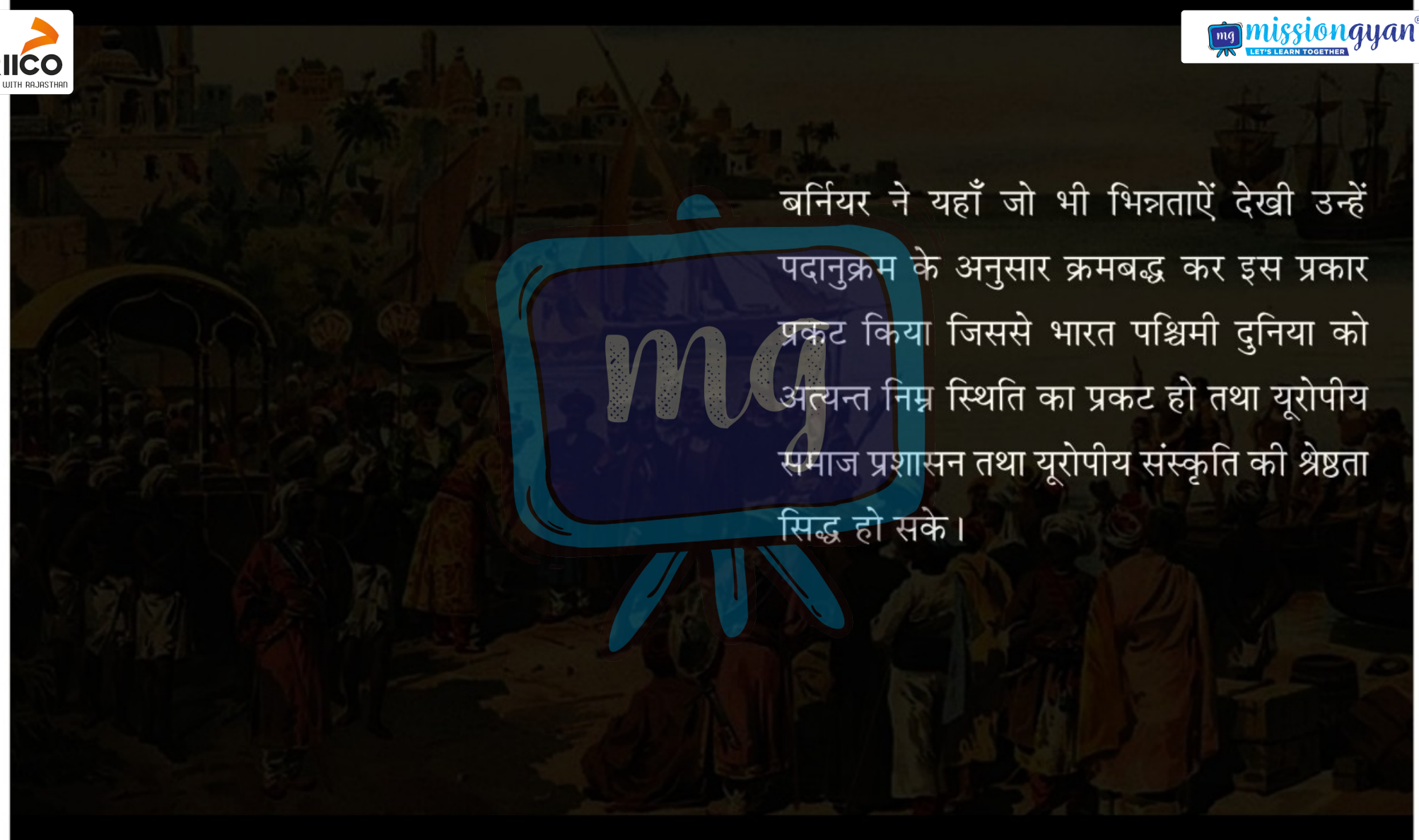

बर्नियर ने यहाँ जो भी भिन्नताऐं देखी उन्हें पदानुक्रम के अनुसार क्रमबद्ध कर इस प्रकार प्रकट किया जिससे भारत पश्चिमी दुनिया को अत्यन्त निम्न स्थिति का प्रकट हो तथा यूरोपीय समाज प्रशासन तथा यूरोपीय संस्कृति की श्रेष्ठता सिद्ध हो सके।

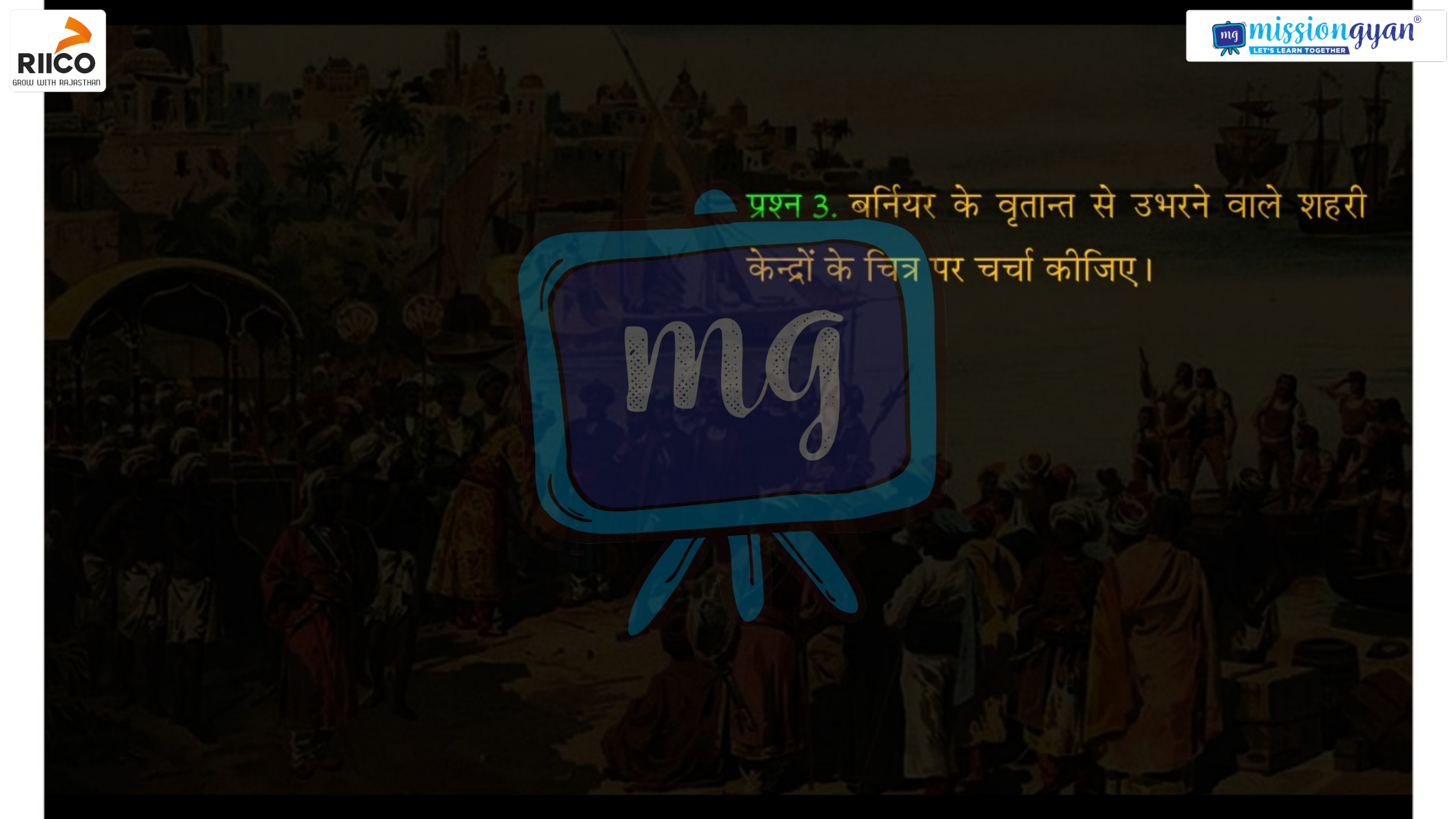

प्रश्न 3. बर्नियर के वृतान्त से उभरने वाले शहरी केन्द्रों के चित्र पर चर्चा कीजिए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : (1) फ्रांसीसी यात्री बर्नियर एक भिन्न प्रकार का बुद्धिजीवी था। उसने मुगल नगरों को "शिविर नगर" कहा है। जो अपने अस्तित्व हेतु राजकीय आश्रय पर निर्भर थे। ये नगर राजदरबार के आगमन के साथ अस्तित्व में आते तथा कहीं ओर जाने पर पतन की ओर अग्रसर हो जाते थे।

(2) उसके अनुसार सभी प्रकार के नगर अस्तित्व में थे जैसे उत्पादन केन्द्र, व्यापारिक नगर, बन्दरगाह नगर, तीर्थ स्थान, धार्मिक नगर आदि।

(3) नगरों में व्यापारियों का संगठन होता था। पश्चिमी भारत में इस प्रकार के समूहों को ''महाजन'' कहा जाता था तथा मुखिया को ''सेठ'' अहमदाबाद जैसे शहरों में सभी महाजनों का सामुहिक प्रतिनिधित्व व्यापारिक समुदाय के नेता द्वारा होता था जिसे ''नगर सेठ'' कहा जाता था।

(4) शहरों में अन्य व्यवसायिक समूह भी होते थे जैसे - हकीम अथवा वैद्य, पंडित या मुल्ला, अधिवक्ता, चित्रकार, संगीतकार, सुलेखक, वास्तुविद आदि। कुछ वर्गों को राज्य आश्रय देता था तथा कुछ सामान्य लोगों की सेवा कर जीवनयापन करते थे।

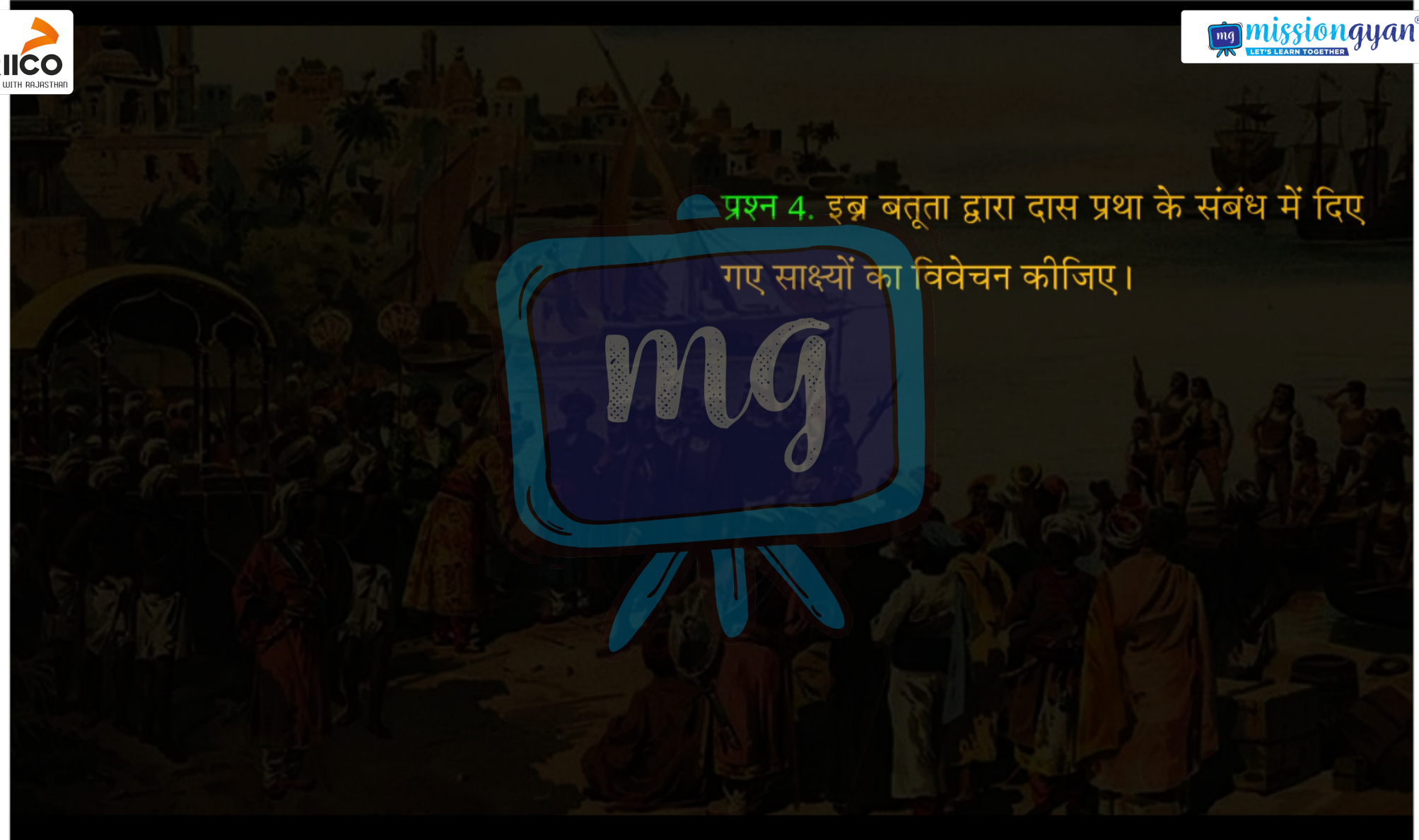
प्रश्न 4. इब्न बतूता द्वारा दास प्रथा के संबंध में दिए गए साक्ष्यों का विवेचन कीजिए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : इब्न बतूता ने दिल्ली सल्तनत काल में दासों का विस्तृत वर्णन किया है। उसके अनुसार फिरोज शाह तुगलक ने दासों के लिए एक अलग विभाग खोला हुआ था। दिल्ली में दासों की बहुत बड़ी संख्या मौजूद थी तथा दासों में अत्यधिक भिन्नता भी थी। इब्न बतूता सुल्तान की बहिन की शादी में दासों के प्रदर्शन से विशेष प्रभावित हुआ था। उसने स्वयं ने सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक को भेंट देने हेतु घोड़े, ऊंट व दास खरीदे थे साथ ही सुल्तान के गवर्नर को भी भेंट में दास दिया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सामान्यत: दासों को घरेलू कार्यों व मेहनत मजदूरी के कार्यों में लगाया जाता था। इसके अतिरिक्त अमीरों को लाने ले जाने वाली डोली व पालकी में भी उन्हें काम में लिया जाता था। अधिकांश परिवारों में दास रखने की परम्परा थी। दासों विशेषरूप से उन दासों का मूल्य बहुत कम होता था जिन्हें घरेलू श्रम में काम में लिया जाता था। विशेष योग्यता वाले दासों का विशेष महत्व व मूल्य हुआ करता था।

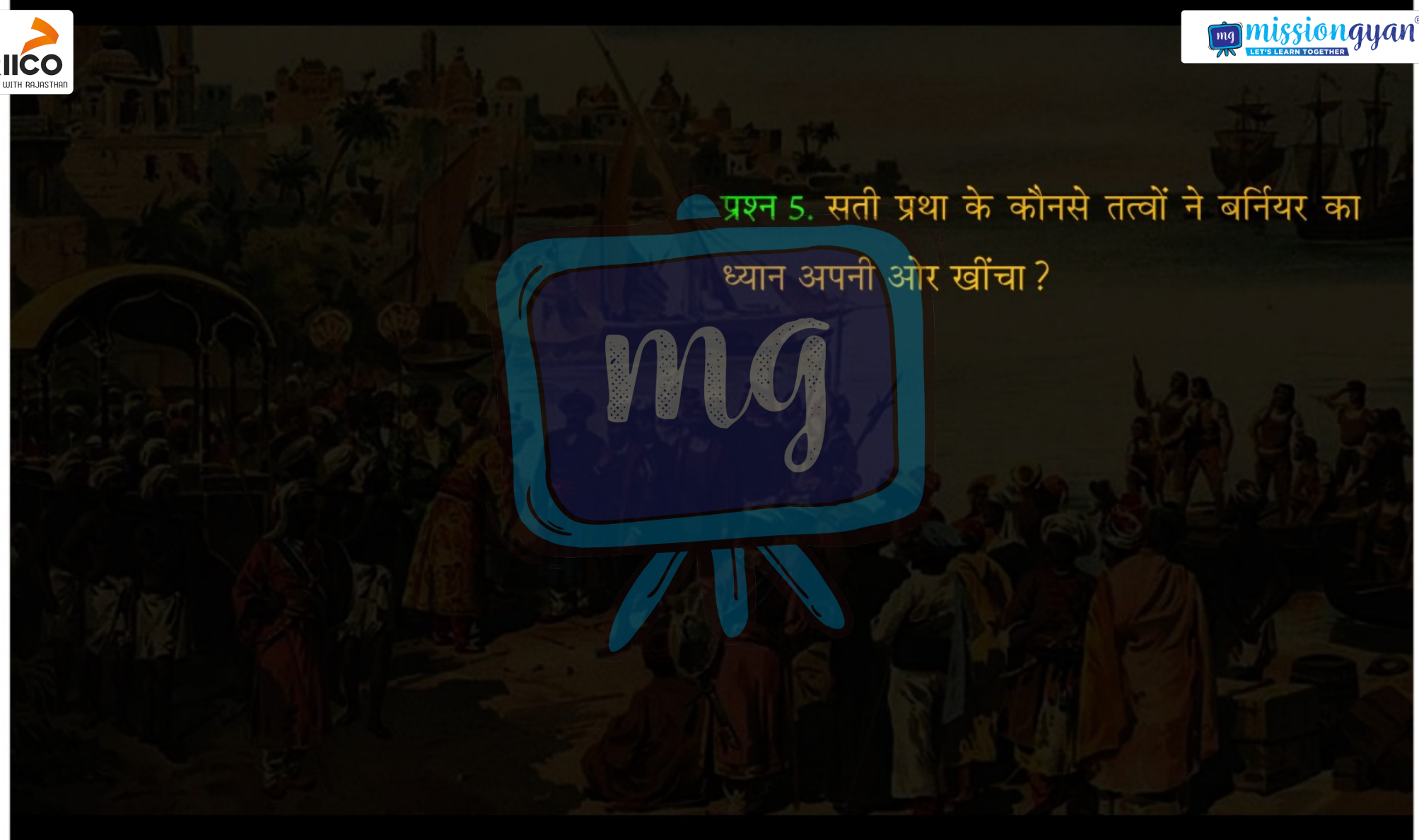
प्रश्न 5. सती प्रथा के कौनसे तत्वों ने बर्नियर का ध्यान अपनी ओर खींचा ?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : बर्नियर ने सती प्रथा के संबंध में विस्तृत वर्णन लिखा है। उसने लाहौर में स्वयं एक अल्पव्यस्क कन्या को सती होते हुए देखा था।

1. सती प्रथा भारत में व्यापक रूप से अस्तित्व में थी।
2. यह एक अमानवीय प्रथा थी जिसमें पति के निधन हो जाने पर उसकी विधवा स्त्री को अग्नि के भेंट चढ़ा दिया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

3. अधिकांश विधवाओं जिनमें बहुत कम आयु की बच्चियां भी होती थीं, उनहें जीवित जलने के लिए बाध्य किया जाता था।

4. सती होने की प्रक्रिया में ब्राह्मण व घर परिवार की बड़ी महिलाऐं भी शामिल होती थीं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्न 6. जाति व्यवस्था के सम्बन्ध में अल-बिरूनी की व्याख्या पर चर्चा कीजिए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : अल-बिरूनी ने अपनी पुस्तक ''किताब-उल-हिन्द'' में भारतीय समाज मे प्रचलित जाति-व्यवस्था का विशुद्ध वर्णन किया है। उनकी व्याख्या निम्नानुसार है -

1. सामाजिक वर्गों का विवरण :- अल-बिरूनी ने अपनी पुस्तक में भारतीय जाति-व्यवस्था के सम्बन्ध में उसे अन्य समाजों तथा समुदायों के प्रतिरूपों के माध्यम से समझने तथा उसकी व्याख्या करने का प्रयास किया है।

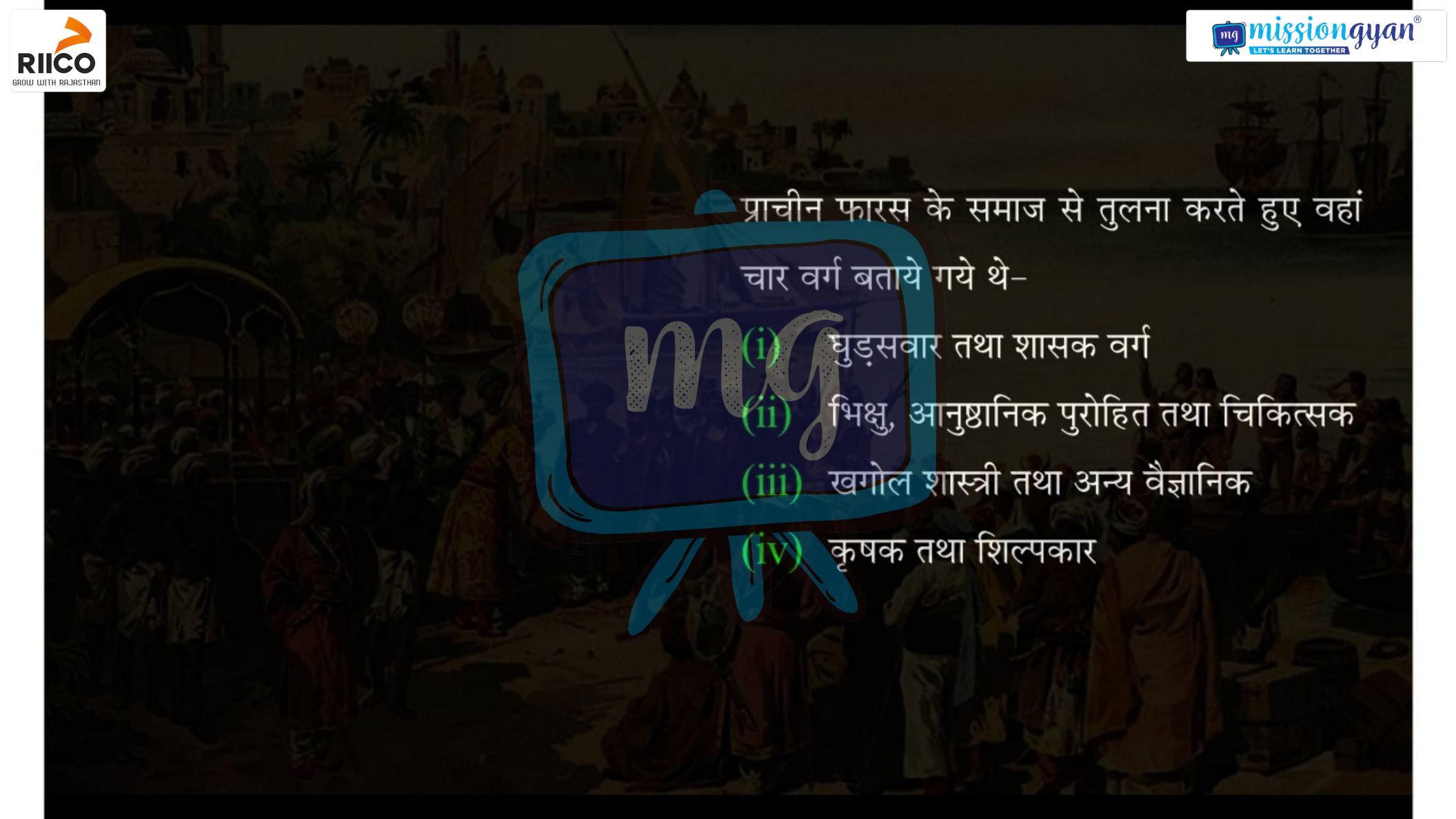

प्राचीन फारस के समाज से तुलना करते हुए वहां चार वर्ग बताये गये थे-

(i) घुड़सवार तथा शासक वर्ग

(ii) भिक्षु, आनुष्ठानिक पुरोहित तथा चिकित्सक

(iii) खगोल शास्त्री तथा अन्य वैज्ञानिक

(iv) कृषक तथा शिल्पकार

RIICO GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

2. **''अपवित्रता'' पर विचार :-** अल-बिरूनी जाति व्यवस्था के सम्बन्ध में ब्राह्मणवादी व्याख्या को मानता था, परन्तु वह अपवित्रता की धारणा को अस्वीकार करता है। उसके अनुसार ''प्रत्येक वह वस्तु जो अपवित्र हो जाती है, अपनी पवित्रता की मूल स्थिति को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करती है और सफल होती है।'' उदाहरण के लिए सूर्य वायु को स्वच्छ करता है और समुद्र में नमक पानी को गन्दा होने से बचाता है। अल-बिरूनी इस बात पर जोर देता है कि यदि ऐसा नहीं हो, तो पृथ्वी पर जीवन असंभव हो जाता।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उसके अनुसार जाति व्यवस्था में अपवित्रता की धारणा प्रकृति के नियमों के विरूद्ध थी।

3. **भारत में प्रचलित वर्ण व्यवस्था :-** अल-बिरूनी ने भारत में प्रचलित वर्ण व्यवस्था का उल्लेख निम्नानुसार किया है।

(i) **ब्राह्मण या पुरोहित :-** उसके अनुसार ब्राह्मणों को वर्ण व्यवस्था में सर्वोच्च स्थान दिया गया है। ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार इनकी उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के मुख से मानी गयी है।

(ii) क्षत्रिय :- क्षत्रियों की उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के कन्धे व भुजाओं से मानी गयी है। सामाजिक दृष्टि से इन्हें द्वितीय स्थान दिया गया है।

(iii) वैश्य :- क्षत्रियों के बाद वैश्यों का स्थान आता है। इनकी उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा की जंघाओं से हुई मानी जाती है तथा वर्ण व्यवस्था में इन्हें तृतीय स्थान दिया गया।

(iv) शुद्र :- शुद्रों का जन्म आदि देव ब्रह्मा के चरणों से माना जाता है। चरणों का शरीर में अंतिम स्थान होने के कारण समाज में अंतिम अर्थात् चतुर्थ स्थान दिया गया तथा तीनों वर्णों की सेवा करना इनका कर्त्तव्य माना गया।

इन सभी वर्गों में भिन्नता होने के बाद भी ये शहरों व गाँवों में मिल-जुल कर रहा करते थे।

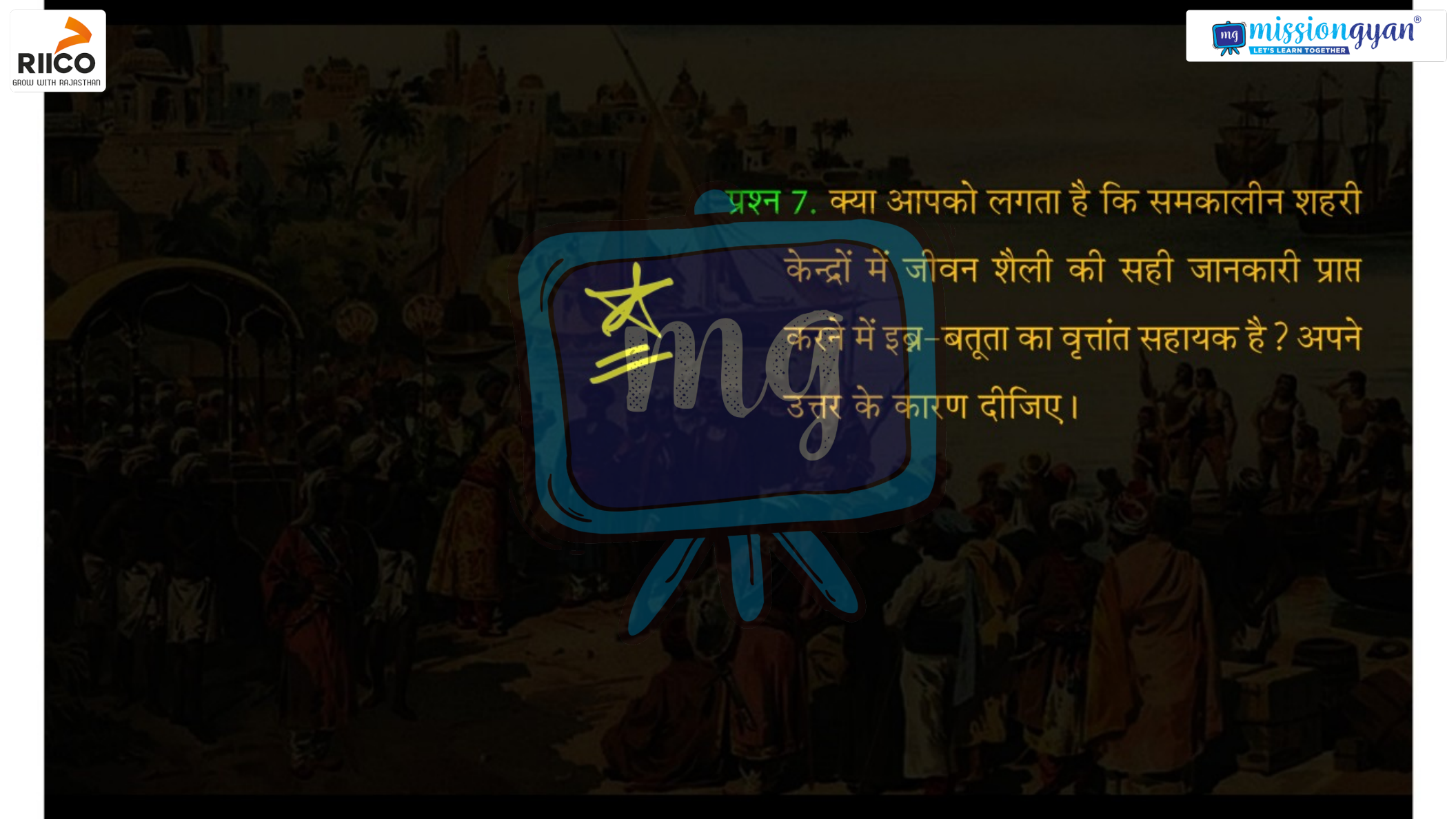

प्रश्न 7. क्या आपको लगता है कि समकालीन शहरी केन्द्रों में जीवन शैली की सही जानकारी प्राप्त करने में इब्न-बतूता का वृत्तांत सहायक है ? अपने उत्तर के कारण दीजिए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : इब्न-बतूता ने अपने यात्रा वृत्तान्त "रिहला" में समकालीन शहरी केन्द्रों की जीवन शैली का विस्तृत वर्णन किया है। हाँ, हमें लगता है कि समकालीन शहरी केन्द्रों में जीवन शैली की सही-सही जानकारी प्राप्त करने में इब्न-बतूता का वृत्तान्त काफी सहायक है। ऐसा लगता है कि जैसे सजीव चित्र हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया गया हो। उसकी जानकारी का मुख्य आधार उसके द्वारा किया गया सूक्ष्म अध्ययन एवं अवलोकन था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इब्न बतूता के वृत्तान्त से समकालीन शहरी केन्द्रों में जीवन शैली के बारे में निम्न जानकारियां प्राप्त होती हैं :-

1. व्यापक अवसरों से परिपूर्ण घनी आबादी वाले शहर:- इब्न बतूता के अनुसार तत्कालीन नगर घनी आबादी वाले व समृद्ध थे। भारतीय उपमहाद्वीप के नगरों में इच्छा शक्ति, साधनों व कौशल वालों के लिए कार्य के भरपूर अवसर थे। कभी-कभी युद्धों तथा अभियानों के कारण नगरों को नुकसान भी होता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

2. चमक-दमक वाले बाजार व भीड़-भाड़ वाली सड़कें :- अधिकांश शहरों में चमक-दमक वाले बाजार थे तथा विविध प्रकार की सामग्री से भरे हुए थे। अधिकांश शहरों में भीड़-भाड़ वाली सड़कें थीं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

3. बड़े-बड़े शहर :- इब्न बतूता के अनुसार दिल्ली एक बहुत बड़ा शहर था, जिसकी आबादी बहुत अधिक थी। दौलताबाद भी कम नहीं था। वह आकार में दिल्ली को चुनौती देता था।

4. बाजारों का सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र होना :- बाजार केवल क्रय-विक्रय के स्थान ही नहीं थे, बल्कि ये सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र भी थे। अधिकांश बाजारों में एक मंदिर व मस्जिद होती थी। कुछ बाजारों में नर्तकी, संगीतकारों व गायकों के प्रदर्शन हेतु सार्वजनिक स्थान भी उपलब्ध था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

5. इतिहासकारों द्वारा इब्न-बतूता के वृत्तान्त का प्रयोग :- इतिहासकारों ने इब्न बतूता के वृत्तान्त का प्रयोग नगरों की समृद्धि का वर्णन करने में किया है। इतिहासकार यह तर्क देते हैं कि नगरों की समृद्धि व सम्पत्ति का एक बड़ा भाग गाँवों के अधिशेष के अधिग्रहण से प्राप्त होता है।